

DM 237

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ ॐ नमो ॥

॥ ॐ नमो ॥

॥ ॐ नमो ॥

॥ ॐ नमो ॥

॥ ॐ नमो ॥

॥ ॐ नमो ॥

ठवत ॥ उं आ ॥ वि ॥ द्यातक सर्व यन्महा न सै कानान ॥ अक
 य हं रुट ॥ जा ग्वरु ॥ उं वि द्यातक सर्व विन धम नानेयनय
 हं रुट ॥ के व म ना ॥ उं रु न र सी रु न र वं दि य व नि वि ल्हा ध
 नि नू न च ल हं रुट स्वा हा ॥ या द्या दि क न स य जा य द्या न्या स
 रं वा य हा न य जा ला स्या द्यं भ वा द न उ ति म नु य न जा य उं ध
 ध र्मा ध य दि य स म य रु य ॥ ॥ ~~गं गि क ल ग्मा ध वा न वि धि~~ ॥

~~न मा य जा य~~ ॥ ग मा ग्गि क रु स न्ना या त च रु ग्गि धि स्म न
 या य ॥ उं व रु स त्व ग्गि ध म न रु न रु स ध न या य ॥ ग मा रु
 म था य न या य ॥ ~~म न~~ ॥ उं भ म रु रु ग्गि दि या यु वि रा
 व रु द व ना व रु ध म्म रं रु दि ना यृ था वि जा न रु लो ग मा
 र्वा वि द्यु ग्गि नि न क्की क र्क रु स्व स्ति स्वा हा ॥ ~~य न नि~~
 ग दा न ग्गि रु य न ॥ स्व स्ति वा क न ॥ ग्गि रु य न य दि

अस्त्रोहा ॥ ३ ॥ कल लस्य हं ॥ **गणकालिता** ॥ ग्रिम ल्ध्र यं कान उं
 यद्गमाने वा गश्य निनें जाता ग्रिम ल्ध्र लं नुं का ना इ वा यिन
 क्षेम क मख्यं च गु गु उं वा भर्द द क मं उ ल ध नं स य वि न द
 क मा ना ध नं यी ती व ला रु न र्ध य श्वा य वि मि नी मि न र्ध उ
 टा म क न धा मि र्ध व द स त्वा लं क र मी नि नं स म या मि वि र
 वा ॥ ३ ॥ अ लि म हा रु ग द व म मि द्वि उ स ख म गृ दि त्वा

२०२ अक्षय वृष म म म

रु वि म हा न मि र्ध स र्दि ता रु व स्वा हा ॥ ४ ॥ ह्य न न ह्ना ना मि
 मा वा म् ॥ ३ ॥ ट कि उ हं ३ ०० मि म न्ध ट कि ना रु म दा यी म
 क य ॥ **गानि ना ड न य** ॥ ३ ॥ अ म य दी य दि य्या नि य म
 हा मि य रु व क य वा हा ना य ॥ ४ ॥ ३ ॥ व हा ॥ स म य
 ॥ ३ ॥ रु मि ति ॥ ३ ॥ व रु न रु हं ॥ ३ ॥ रु र्ध य मि रु स्वा हा ॥ ॥
 य रु ग रु क ल ग ल खान रु य ॥ ॥ ३ ॥ अ म य य व स

वि रु म ना

स्वा ना य नार्ध युगि र्छु स्वा हा ॥ ३ ॥ गृथ य व स का न य
 घा यं युगि र्छु स्वा हा ॥ ४ ॥ गृथ य व स का न य ग्रा य म
 नं युगि र्छु स्वा हा ॥ ५ ॥ व द न क ड ग्रा ॥ ६ ॥ मि म लु न स म
 य मि य व ग य न ॥ ७ ॥ स र्व न था ग ग का य वि श्व ध न
 र्छु स्वा ॥ ८ ॥ ग ग र्छु ॥ य र्छु म ध र्छु म ॥ य र्छु य र्छु
 न य र्छु ॥ ला ग्ग म् य र्छु वा न ना य न र्छु य ॥ ९ ॥ स र्व य

यदरुनवकाय सर्वकार्यदरुस्यारु ॥ धर्मगुणगुण
यानुविष्टान् ॥ अजमान् कवयकं ॥ सुसुमंगलान्
गुणविष्टान् ॥ उं ग्राह्यारु ॥ धनसाधन ॥ उं उं ह्यारु ॥ इत्य
सधन ॥ उं जिह्यारु ॥ विरिभाधन ॥ उं कनरुह्यारु ॥ अ
नादिस्वधन ॥ उं ग्राह्यारु ॥ समिधसाधन ॥ ॥ गुण
मायिमखेनकावेलयवरुलयमानं गह्वरुह्यारु

वृजान्नी संतवस्ति शुवंध वैद्विमुखदशान् गथ
काल्गामुखरु सनः स्वस्वमरुन उं गृन् यन्नाचमनेयति
कृत्वा हा ॥ उं गृन् यन्नाचमनेयति ॥ यन्नाचमनेयति ॥
गृन् यन्नाचमनेयति ॥ उं गृन् यन्नाचमनेयति ॥
याग ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥ येनासा ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥
हा ॥ खदिवा ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥ यन्नाचमनेयति ॥ उं वरु

वडा २
वगय स्वाहा ॥ वडसि ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥ ईवलसि
उं वरु सामाय स्वाहा ॥ गानिक ० ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥
हा ॥ वरु गग ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥ यिनासि ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥
जाय स्वाहा ॥ वरु गग ॥ उं मधुन स्वाहा ॥ मधुसि ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥
सरुका नाय स्वाहा ॥ गृन् यन्नाचमनेयति ॥ उं वरु सामाय स्वाहा ॥
सायसि ॥ उं सर्वयो यय ससनाय स्वाहा ॥ वरुका ॥ उं सर्व

कलसयममनाय स्वाहा ॥ कदवर्गतालि ॥ ईं अयुगिगव
हाय स्वाहा ॥ क ॥ ईं वडा य ख स्वाहा ॥ दा हा ल ॥ ईं म र्थि
यदहनदजाय सर्वयाय ह द स्वाहा ॥ दा सु ॥ ईं वडा य ह स्वा
हा ॥ का क ग ॥ ईं वडा व गाय स्वाहा ॥ नं ॥ ईं वडा य मना
य स्वाहा ॥ दा ॥ ईं वडा वी जा य स्वाहा ॥ नवा ॥ ईं वडा म हा
व ला य स्वाहा ॥ मा न मा स ॥ ईं वडा ला जा य स्वाहा ॥ ग वा ॥

ग ५

ईं सर्वार्थ सिद्ध स्वाहा ॥ नु का यु का ॥ ईं सर्वस्य द स्वाहा ॥ अ
जा ध लि जा ॥ ईं वडा य न मा य स्वाहा ॥ लि य ग ॥ ईं वडा
द मन रु ला य स्वाहा ॥ व य ल म ॥ य वा य न न यु डा ला म्मा
द्यं ॥ तु गि न र्थ न ॥ न मा स ना या य स स र्थ ली र्थ ॥ दा
द मा यि यु न कि ल द य क ॥ म य ॥ ईं वडा स खे मा ॥ उ
ध म न न द य क ॥ ध न ग या व ग म रु गि ॥ स्व मि वा क

ना॥ उं अग्नयदि द्या द्या वि वा वि ष मरु गिरि य रु य क य
वा दाना य दान य तं नृ म क म य षिं क नृ नृ म म र्गि य नि र्ग
स्वारु ॥ ॥ **दी भ वा द न** ॥ न र्थ ने ॥ न ना क्ख गि स खान रु रु न रं
उं व रु न रु यो रु न रु त्वा ॥ ॥ **रा व न** ॥ ॥ न न र्व रु न रु य
ना दि के रु त्वा ला का न रु खाना गि वि रा य द्वा ला का ला रु म
य द्वा रु रु दि क म ल च द्वा स ना यालि म रु ला धि य नि त्स्व रु वि

उन्निष्पन्नविद्वाजयनिनामनमलुलाधियनिस्माभुल
यविशाखा॥ स्रष्टुद्विजमय्यां हानसर्ववर्जां कलादिरि
मानिय्यनगादत्तावर्षीवसगाय्यहानसर्ववस्ममयसत्त
यास्त्रिनक्षानमित्रस्मनगात्रुर्नविशाखा॥ नगायाकर्वणः॥
द्वमाकंस्थानद्वृक्षान्धूययायनिनाजनसनानयायद
वयुजासनरुजाथी॥ यथायज्ञानयज्ञात्ताभ्याद्येभ्युनि

नयन ॥ ॥ गंगा देवता मुख नंका नन शुक्ल वर्ण विराय
उं आचमनं युति छुत्वा ॥ सिन्धु विदिश्य **यैवा यैव**
यैवा लाभ्यं यैव युति नयन ॥ देवकृतियाय स्वस्ति वाक्
न देवता ईर्ष्या युति छुत्वा ॥ सुभाया न देवधियक ॥ यैव
वादन ॥ **दाय ॥ उधर्मा ॥ यनयैव** **दायक ॥ रुमस** **स्यान**
इय ॥ मनु ॥ उं समाधि रुनं **दाय ॥ रुमस ॥ उं** गनं गगत
न

विलाकि न हं रुट्गं जा नाय समुक्तस्य यष्टिं कृत्वा ॥ व्या
न ॥ उं वदुयायं नमाय स्वाहा ॥ ययैव ॥ उं सर्वलाकय समना
य स्वाहा ॥ डा खभि ॥ उं आवदवा स स्वाहा ॥ उजम ॥ उं आवजधू
य हं स्वाहा ॥ धूनी ॥ उं आवजा वलाकि नं **दाय ॥ उं** सु
यष्टि सुकल वनं दालनिय नं जा न उ समुक्तस्य यष्टिं कृत्वा
नादि ॥ उं धम्म धम्म नायं दुरुदुरु सर्वविद्यान् यु

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ" "ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

"ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ ḥḥḥḥ"

Handwritten text in a cursive script, likely a medieval manuscript. The text is written on aged, yellowed paper and is organized into six horizontal lines. The script is dense and characteristic of late medieval or early modern handwriting. A small red mark is visible near the top left of the first line.

Handwritten text in a cursive script, likely a medieval manuscript. The text is written on aged, yellowed paper and is organized into six horizontal lines. The script is dense and characteristic of late medieval or early modern handwriting. A small red mark is visible near the top right of the first line.

11 ॐ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript. The text is written on aged, yellowed paper. There are several lines of text, with some words highlighted in red ink. The script is a form of Sanskrit or Hindi.

सुखवलि

Handwritten text in Devanagari script, continuing from the top page. The text is written on aged, yellowed paper. There are several lines of text, with some words highlighted in red ink. The script is a form of Sanskrit or Hindi.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical form of Hebrew or Aramaic, written on aged parchment. The text is organized into six horizontal lines, with some characters highlighted in red ink. The script is dense and characteristic of medieval Jewish manuscripts.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical form of Hebrew or Aramaic, written on aged parchment. The text is organized into seven horizontal lines, with some characters highlighted in red ink. The script is dense and characteristic of medieval Jewish manuscripts.

